सोलन-सि

दिव्य हिमाचल

divyahimachal.com

पहल

महंगे सिलेंडर, घटते वनों से निपटने को आरती एकहिती समूह ने निकाला तोड़

चीड़ की पत्तियों से बनाया कोयला

■ दिव्य हिमाचल ब्यूरो, नाहन

आरती एकहिती समूह कमाह ने चीड़ की पत्तियों से कोयला तैयार करके रोजमर्रा में प्रयोग किए जाने वाले ईंधन के लिए एक नई तकनीक आरंभ करके एक अनूठी पहल की गई है, जिससे जहां रसोई गैस की खपत कम होगी, वहीं पर वनों पर बढ़ते ईंधन का दबाव भी कम होगा और वन में बेकार पड़ी चीड़ की पत्तियों का भी सदुपयोग होगा। पच्छाद तहसील के गांव बजगा की 16 महिलाओं द्वारा गठित आरती एकहीति समूह कमाह ने विभिन्न जीविकोपार्जन तकनीक को अपनाकर जहां स्वावलंबन की ओर कदम बढ़ाया है, वहीं पर यह समूह अन्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गया है। मध्य हिमालय जलागम विकास परियोजना के सौजन्य से इस स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने चीड़ की पत्ती से कोयला बनाने की नई तकनीक को अपनाया है। समूह की प्रधान जयवंती एवं सचिव कमलेश शर्मा ने बताया कि इससे पहले उनके समूह द्वारा केंचुआ खाद तैयार की जा रही थी और समूह द्वारा 50 क्विंटल से अधिक केंचुआ खाद तैयार करके रेणुका वन मंडल को भेजी गई, जिससे समूह की 16 महिलाओं को काफी लाभ पहुंचा है। उन्होंने बताया कि मध्य हिमालय जलागम विकास परियोजना के मंडलीय अधिकारी एसआर राणा के मार्गदर्शन में समूह की महिलाओं को उत्तराखंड के ग्राम्या परियोजना टीहरी के कौशल पंचायत में भ्रमण एवं प्रशिक्षण पर भेजा गया, जहां पर चीड़ की पत्तियों से महिलाओं द्वारा तैयार किए जा रहे कोयला बनाने की विधि की जानकारी प्राप्त की और वापस आकर परियोजना अधिकारी ने इस समूह को कोयला बनाने की एक मशीन, चार चारिंग ड्रम, सोलह स्टाक चुल्हे एवं अन्य सामान उपलब्ध करवाने के साथ-साथ एक दिन का प्रशिक्षण भी दिया। कमलेश शर्मा का कहना है कि समूह की महिलाएं घर के रोजमर्रा कार्यों से निपटने के बाद चीड़ की पत्तियों को एकत्रित करके मशीन के द्वारा कोयला तैयार करती है। परियोजना की आजीविकाकर्ता रीना शर्मा के अनुसार जहां इस तकनीक से वनों को गर्मियों के मौसम में अचानक लगने वाली आग से बचाया जा सकेगा, वहीं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह अहम पहल होगी। मंडलीय परियोजना अधिकारी एसआर राणा के अनुसार एक किलो कोयले में 5885 किलो कैलरी होती है तथा यह योजना काफी कारगर सिद्ध हो रही है। उन्होंने बताया कि परियोजना द्वारा इस समूह को अपना स्वरोजगार आरंभ करने के लिए 90 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है, जबकि दस प्रतिशत हिस्सा महिलाओं द्वारा स्वयं वहन किया जाता है।

चीड़ की पत्तियों से तैयार होगा कोयला

आरती एकहिती समूह कमाह ने की अनूठी पहल

नाहन, 6 अक्तूबर (ब्यूरो): चीड़ की पत्तियों से कोयला तैयार करके रोजमर्रा में प्रयोग किए जाने वाले ईंधन के लिए आरती एकहिती समूह कमाह ने एक नई तकनीक शुरू कर एक अनूठी पहल की है जिससे जहां रसोई गैस की खपत कम होगी, वहीं वनों पर बढ़ते ईंधन का दबाव भी कम होगा और वन में बेकार पड़ी चीड़ की पत्तियों का भी सदुपयोग होगा। पच्छाद तहसील के गांव बजगा की 16 महिलाओं द्वारा गठित आरती एकहिती समूह कमाह ने विभिन्न जीविकोपार्जन तकनीक अपनाकर जहां स्वावलंबन की ओर कदम बढ़ाया है, वहीं यह समूह अन्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गया है। मध्य हिमालय जलागम विकास परियोजना के सौजन्य से इस स्वयं सहायता समूह की महिलाओं ने चीड़ की पत्तियों से कोयला बनाने की नई तकनीक को अपनाया है।

कैसे बनता है चीड़ की पत्तियों से कोयला

समूह की प्रधान जयवंती ने बताया कि चीड़ की पत्तियों को ऑक्सीजन रहित जलाकर कोयला तैयार किया जाता है तथा एक क्विंटल कोयले में 10 किलो गोबर का घोल मिश्रित कर मशीन में डालकर तैयार किया जाता है। इसके उपरान्त कोयले को 3 दिन सुखाकर इसका उपयोग ईंधन के रूप में रसोई में किया जा सकता है। जयवंती के अनुसार एक किलोग्राम कोयला 60 से 90 मिनट तक आंच देता है और 50 किलो कोयला एक रसोई गैस सिलैंडर के बराबर कार्य करता है। कमलेश शर्मा का कहना है कि समूह की महिलाएं घर के रोजमर्रा के कार्यों को निपटाने के बाद चीड़ की पत्तियां एकत्रित कर मशीन द्वारा कोयला तैयार करती हैं।

वनों में वन भी बचेंगे आग से

परियोजना की रीना शर्मा के अनुसार जहां इस तकनीक से वनों को गर्मियों के मौसम में अचानक लगने वाली आग से बचाया जा सकेगा, वहीं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह अहम पहल होगी। इसके अतिरिक्त ईंधन के लिए वनों के कटान पर भी अंकुश लगेगा, साथ ही इस प्रयोग से समय व श्रम की भी बचत होगी।

एक किलो कोयले में 5885 किलो कैलोरी होती है तथा यह योजना काफी कारगर सिद्ध हो रही है। परियोजना द्वारा इस समूह को अपना स्वरोजगार आरंभ करने के लिए 90 प्रतिशत अनुदान दिया जाता है जबकि 10 प्रतिशत हिस्सा महिलाओं द्वारा स्वयं वहन किया जाता है।

- एस.आर. राणा मंडलीय परियोजना अधिकारी